श्री कृष्णं वन्देजगद्गुरूम्
ॐ हरिः तत् सत् शिवोऽहम् सोऽहम्

श्री मत् परमहंस परिव्राजका चार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
अखण्ड पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर
अनन्त श्री डा. स्वामी शाश्वतानंदजी महाराज
(पी.एच.डी.विद्यावाचस्पति, गीता वाचस्पति,
भागवत् भूषण, वेदान्तायुर्वेदरत्न, योगाचार्य)

सदगुरू आरती

मिल कीजै सतगुरू आरती, मिल कीजै।
जिनके चरण कमल रज सुन्दर, भव दुःख सकल निवारती।
मिल कीजै।।
दया से जिनकी द्वैत दूर हो, मन की माया टारती।
मिल कीजै।।
वाणी अमृतमय सुन जिनकी बुद्धि ब्रह्म को धरती।
मिल कीजै।।
पा करके विज्ञान ज्ञान को, पूर्ण शांति विस्तारती।
मिल कीजै।।

SHRI AKHAND GITAPITH, SHASHVAT SEVAASHRAM TRUST (REGD.)
Between Madhya marg & Umari Road, (Near Shri Krishna Ayurveda College)
KURUKSHETRA, HARYANA, INDIA - Pin 136 118
Tel. : 01744-225640, 229468 Cell : 9416051108

Sponsored By:
SADHU RAM GUPTA & RADHARANI
52, RAJ NAGAR, DELHI-110034

शिवोऽहम्
अहंग्रह-उपासना

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहम्।
अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ।।
अखिल विश्व का जो परम आत्मा है।
सभी प्राणियों का वही आत्मा है।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।।शिवोऽहम्।।
जिसे शस्त्र काटे ना अग्नि जलावे।
गलावे ना पानी न मृत्यु मिटावे।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।।शिवोऽहम्।।2।।
अजर और अमर जिसको वेदो न गाया।
जिसका ज्ञान अर्जुन ने हरि से था पाया।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।।शिवोऽहम्।।3।।
अमर आत्मा है, विनाशी है काया।
जो सत् आत्मा है सभी में समाया।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।।शिवोऽहम्।।4।।
है चन्द्र में सूरज में आभास जिसका।
है तारों में बिजली में प्रकाश जिसका।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।।शिवोऽहम्।।5।।
नहीं तीनों कालों में हो नाश जिसका।
सभी प्राणियों के घट वास जिसका ।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।।शिवोऽहम्।।6।।

आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते ।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते ।।जय.।।

कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामाशक्तिहरा ।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा ।।जय.।।

निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल, मलहारी ।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी ।।जय.।।

राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा ।
भव-भय-हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा ।।जय.।।

आसुर-भाव विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी ।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी ।।जय.।।

समता-त्याग सिखावनि, हरि-मुख की बानी ।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी ।।जय.।।

दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै ।
हरि-पद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ।।जय.।।